2025

HINDI — HONOURS

Paper : DSE-A-4

(Tulsidas)

Full Marks : 65

The figures in the margin indicate full marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

(तुलसीदास)

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×10

(क) "तदपि देवि मैं देवि असीसा। सफल होनहित निज बागीसा।।"— यह पंक्ति किस कृति की है तथा इसमें कौन-सा अलंकार है?

(ख) 'रामचरितममानस' और 'गीतावली' का कौन-सा काण्ड पाठ्यक्रम में निर्धारित है?

(ग) तुलसीदास के प्रिय दो छंदों के नाम बताइए।

(घ) विनय पत्रिका में सर्वप्रथम किस देवता की वंदना की गई है? उसमें कुल कितने पद हैं?

(ङ) 'कवितावली' में प्रयुक्त दो छंदों का नाम लिखिए।

(च) 'गीतावली' में प्रयुक्त किन्हीं दो रागों का नाम लिखिए।

(छ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार तुलसी की कुल कितनी प्रामाणिक रचनाऐं हैं? ब्रजभाषा में रचित एक कृति का नाम बताएँ।

(ज) 'रामचरितमानस' में किस शैली का प्रयोग है तथा उसकी भाषा क्या है?

(झ) 'चित्रकूट-प्रसंग' किन दो कृतियों में वर्णित है– नाम लिखिए।

(ञ) पाठ्यक्रम में निर्धारित कृतिओं के अतिरिक्त तुलसी की किन्हीं दो कृतियों के नाम बताइए।

2. किन्हीं ***तीन*** आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3

(क) पठित ग्रंथों के आधार पर तुलसी के काव्य सौष्ठव का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

(ख) "विनय पत्रिका तुलसी का आत्मालाप है।"— कथन के आलोक में तुलसी की विनयशीलता पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'कवितावली' के मूल प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

(घ) 'रामचरितमानस' में निहित मानवीय मूल्यों की मीमांसा कीजिए।

(ङ) 'गीतावली' में वर्णित राम के बाल स्वरूप के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×3

(क) जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि सेभु नचावनिहारे।।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरू तुम्हहि की जाननिहारा।।
सोर जानह जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई।।
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन।।

(ख) भागीरथी-जलु पान करौं, अरु नाम है राम के लेत नितै हौं।
मोको न लेनो, न देनो कछू, कत्यि! भूलि न राबरी ओर चितैहौं।।
जानि कै जोरु करौ, परिनाम तुम्है पधितैहौ, पै मैं न भितैहौं।।
ब्राह्मण ज्यौं उगिल्यो उरगारि, हौं त्यों हीं तिहारें हिएँ न हितैहौं।।

(ग) झूलत राम पालने सोहैं। भूरि-भाग जननिजन जोहैं।
तन मृदु मंजुल मेचकताई। झलकति बाल विभूषण झाँई।।
अधर-पानि-पद लोहित लोने। सर-सिंगार भव सारस सोने।
किलकत निरखि विलोल खिलौना। मनहुँ विनोद लरत छवि छौना।।

(घ) केसव! कहि न जाइ का कहि ये।
देखत तब रचना बिचित्र हरि! समुझि मनहिं मन रहि ये।।
सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखाचितेरे।
धोये मिटइ नमरइ भीति; दुख पाइय एहि तनुहेरे।।
रबिकर-नीर बसै अति दारून मकर रूप तेहि माहीं।
बदन-हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं।।
कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउमानै।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै।।

(ङ) सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत व्याकुल भए।
लोचन सरोरूह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नए।।
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देहकी।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की।।